रूपरेखा

- प्रस्तावना
- उपयोग
- संरचना
- प्रकार
- निष्कर्ष

मनोविश्लेषण (Psychoanalysis)

- फ्रायड ने व्यक्तित्व के जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, उसे व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त कहा जाता है।
- मनोविश्लेषण (Psychoanalysis), आस्ट्रिया के मनोवैज्ञानिक सिग्मंड फ्रायड द्वारा विकसित कुछ मनोवैज्ञानिक विचारों (उपायों) का समुच्चय है।
- मनोविश्लेषण मुख्यत: मानव के मानसिक क्रियाओं एवं व्यवहारों के अध्ययन से सम्बन्धित है किन्तु इसे समाज के ऊपर भी लागू किया जा सकता है।

मनोविश्लेषण के उपयोग

- मनोविश्लेषण के तीन उपयोग हैं:
- यह मस्तिष्क की परीक्षा की विधि प्रदान करता है;
- यह मानव व्यवहार से सम्बन्धित सिद्धान्तों का क्रमबद्ध समूह प्रदान करता है
- यह मनोवैज्ञानिक या भावनात्मक रोगों की चिकित्सा के लिये उपाय सुझाता है।

व्यक्तित्व की संरचना

- फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना का वर्णन निम्नांकित दो मॉडलों के आधार पर किया है-
- (अ) आकारात्मक मॉडल
- (ब) गत्यात्मक या संरचनात्मक मॉडल

आकारात्मक मॉडल

फ्रायड के अनुसार मानव प्रकृति के व्यवहार 3 स्तरो से नियंत्रित होते हैं

- **चेतन मन conscious**
- **अर्द्धचेतन मन half conscious**
- **अचेतन मन unconscious**

चेतन- conscious

- चेतन मन में से समस्त अनुभव, इच्छायें, प्रेरणायें, संवेदनायें आती हैं। जिनका सम्बन्ध वर्तमान समय से होता है और जिसमें व्यक्तित्व जाग्रतावस्था में होता है। अत: केवल वर्तमान संबंध होने के कारण चेतन मन व्यक्तित्व के अत्यन्त सीमित पहलू का प्रतिनिधित्व करता है।
- चेतन मन 10% कार्य करता है

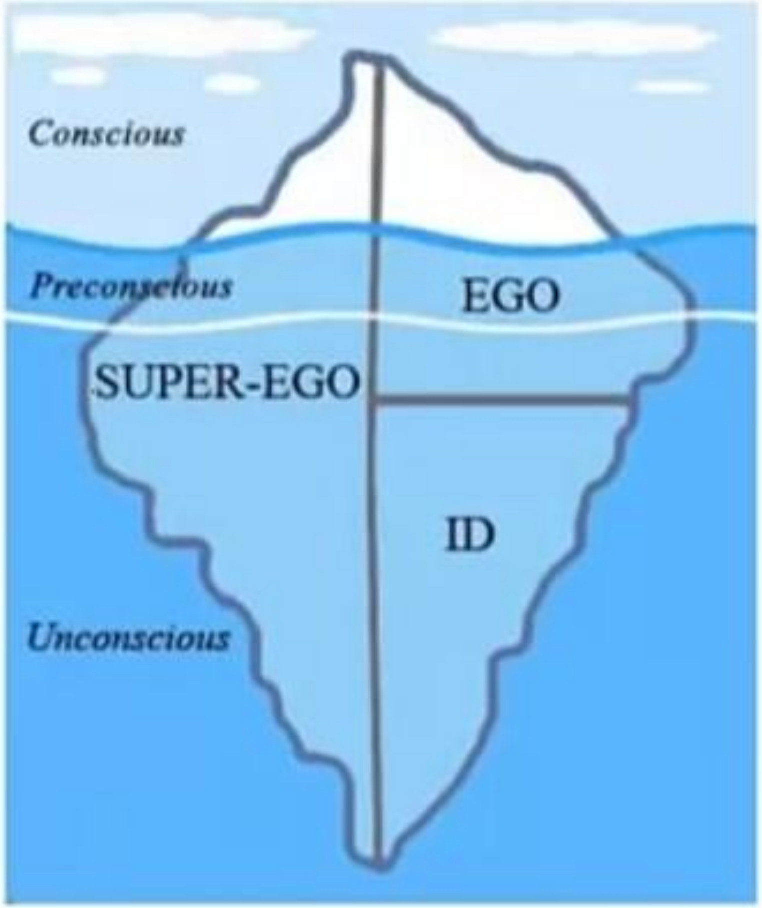

अर्द्धचेतन-half conscious

- यह चेतन एवं अचेतन के मध्य की स्थिति है। इस अवस्था में व्यक्तित्व न तो पूरी तरह जाग्रत अर्थात् चेतन होता है। और न ही पूरी तरह से अचेतना
- फ्रायड का मानना है कि अदधचेतन मन में ऐसी इच्छाएं, भावनायें एवं अनुभूतियां आती हैं, किन्तु प्रयास करने पर चेतन स्तर पर आ जाती है। अवचेतन मन को सुलभस्मृति के नाम से भी जाना जाता है।

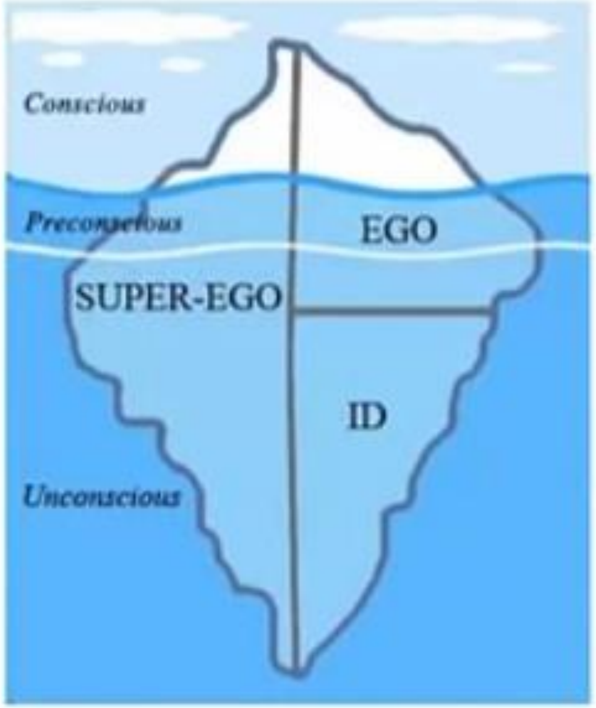

- उदाहरण- जैसे कि कोई व्यक्ति अपना चश्मा रखकर भूल जाता है। कुछ समय तक सोचने के बाद उसे याद आता है कि वह चश्मा तो अलमीरा में रख आया है।
- उदाहरण में व्यक्ति को प्रारंभ में याद नहीं आता है कि अचुक वस्तु उसने कहीं रखी है अर्थात् वह स्मृति अभी चेतनमन के स्तर पर नहीं है, किन्तु कुछ समय के बाद उसे स्मरण हो आता है कि वह चीज उसने यहां पर रखी है। इस प्रकार वह स्मृति चेतन मन का एक अच्छा उदाहरण है।

अचेतन- unconscious

- अचेतन शब्द, चेतन के ठीक विपरीत है अर्थात् जो चेतना से परे हो, वह अचेतन है।
- फ्रायड ने व्यक्तित्व के आकारात्मक मॉडल में चेतन एवं अर्द्धचेतन की तुलना में अचेतन को कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना है।
- उनके अनुसार मनुष्य का व्यवहार अचेतन अनुभूतियां इच्छाओं एवं प्रेरणाओं से ही सर्वाधिक प्रमाणित होता है।

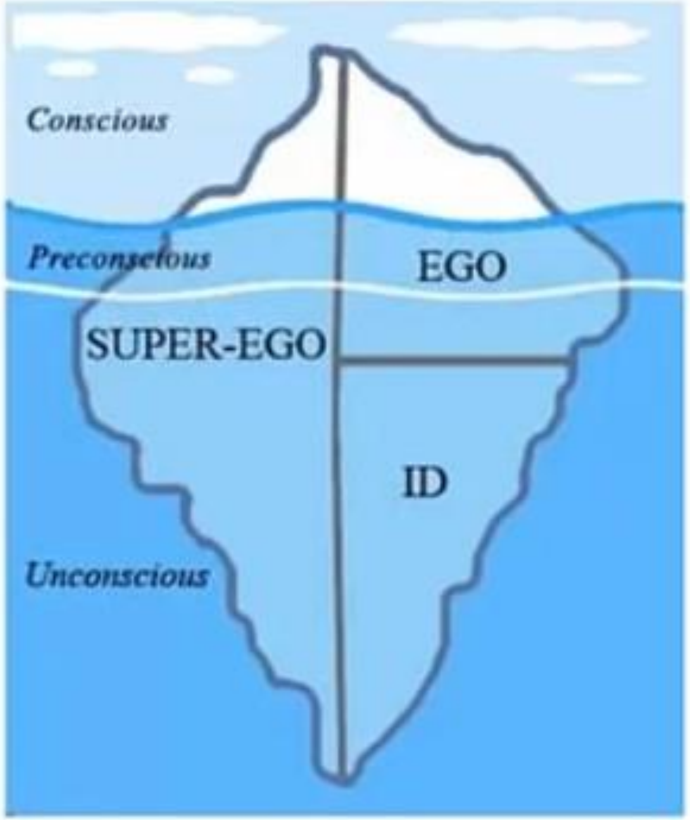

गव्यात्मक या संरचनात्मक मॉडल-

- फ्रायड का मत है कि मूल प्रवृतियों से उत्पन्न मानसिक संघर्षों का समाधान जिन साधनों के द्वारा होता है। वे सभी गत्यात्मक या संरचनात्मक मॉडल के अन्तर्गत आते हैं।
- फ्रायड के अनुसार ऐसे साधन तीन हैं-
- इदम् (ID)
- अहं (EGO)
- पराअहं (SUPER EGO)

इदम् (ID) उपाहं

- यह व्यक्तित्व का जैविक तत्व है। इसमें व्यक्ति की जन्मजात प्रवृत्तियां होती हैं।
- उपाहं आनन्द सिद्धान्त के आधार पर कार्य करता है। इनका आशय यह है कि इसमें केवल ऐसी प्रसवृत्तियां होती हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सुख प्राप्त करना होता है।
- इन प्रवृत्तियों का उचित अनुचित विवेक- अविवेक इत्यादि से कोई भी संबंध नहीं होता है।
- उपाहं की प्रवृत्तियां का गुण, असंगठित आक्रामकता युक्त तथा नियम-कानून इत्यादि को नहीं मानने वाली हौती हैं।

- उपाहं पूरी तरह से अचेतन होता है। इसलिये वास्तविकता या यथार्थ से इसका कोई संबंध नहीं होता है
- एक छोटे बच्चे में उपाहं ID की प्रवृत्तियां होती हैं।

Id:

Ego:

Superego:

अहं (EGO)

- यह वास्तविकता सिद्धान्त के आधार पर कार्य करता है अर्थात् इसका संबंध वातावरण की वास्तविकता के साथ होता है।
- जन्म के कुछ समय बाद जब नैतिक एवं सामाजिक नियमों के कारण व्यक्ति की सभी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है, तो उनमें निराशावादी प्रवृत्ति उत्पन्न होती है और उसका परिचय वास्तविकता से होता है। परिणाम स्वरूप उसमें अहं का विकास होता है।
- यह हमारे सोचने का तार्किक तरीका है जो परिस्थितियों द्वारा विकसित होता है।
- अहम् को आदमी के भीतर आदमी का रूप समझ सकते हैं।

- अहं को व्यक्तित्व का निर्णय लेने वाला पहलू माना गया है।
- अहं आंशिक रूप से चेतन, आंशिक रूप से अर्द्धचेतन तथा आंशिक रूप से अचेतन होता है। इसलिये अहं द्वारा मन के तीनों स्तरों पर ही निर्णय लिया जाता है।

Id:

Ego:

Superego:

पराअहं (SUPER EGO)

- बच्चा जैसे-जैसे अपने जीवन के विकासक्रम में आगे बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उसका दायरा बढ़ने लगता है। उसका अपने माता-पिता से तादात्म्य, जुड़ाव स्थापित होता है। परिणाम स्वरूप वह जानना शुरू करता है कि क्या गलत है और क्या सही? क्या उचित है? क्या अनुचित/इस प्रकार उसमें पराहं विकसित होता है।
- अहं के समान पराहं भी आंशिक रूप से चेतन अर्द्धचेतन एवं अचेतन अर्थात् तीनों होता है।
- पराअहं आदर्शवादी सिद्धान्त द्वारा नियंत्रित होता है अर्थात् यह नैतिकता पर आधारित होता है।

- पराअहम को आदमी के भीतर देवता समझा जा सकता है।
- यह नैतिक कार्यों के लिए बाध्य किया जाता है

Id:

Ego:

Superego:

निष्कर्ष

फ्राइड ने मानव की प्रकृति तथा व्यक्तित्व को समझने के लिए अपना सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने मन की अवस्थाओं चेतन मन अर्धचेतन मन अचेतन मन को समझाया है तथा इदंम अहं और पराअहं को मानशिक प्रविति्तियों के आधार पर बताया है।